विल्मा रुडॉल्फ की कहानी

विल्मा रुडॉल्फ का जन्म समय से पहले हुआ था। इसलिए छुटपन में वह बहुत कमज़ोर थी। वह अक्सर बीमारियों से घिरी रहती थी। गरीबी के कारण उसका कभी अस्पताल में इलाज नहीं हो पाया। जब उसकी बाईं टाँग विकृत होने लगी तब कहीं जाकर माँ उसे डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने बताया कि विल्मा को पोलियो है।

पर माँ ने हार नहीं मानी। हफ्ते में दो दिन वह अपनी बच्ची को फिज़ियोथेरापी के लिए ले जाया करती थी। छह साल की उम्र में टाँग पर लोहे की पत्ती बाँधकर विल्मा चलने का अभ्यास करने लगी।

हाई स्कूल तक पहुँचते-पहुँचते वह बास्केटबॉल खेलने लगी थी। स्कूल की टीम में उसका चयन भी हुआ और वह टीम की सबसे बढ़िया खिलाड़ी बनी।

टेनेसी विश्वविद्यालय का एथलेटिक कोच उसके खेल से इतना प्रभावित था कि उसने विल्मा को युनिवर्सिटी के मशहूर "टाइगरबेल्स" महिला एथलेटिक टीम में शामिल होने का न्यौता दिया।

1956 में विल्मा अपने देश (संयुक्त राज्य अमरीका) की ऑलम्पिक टीम की सदस्य बनी। मेलबॉर्न ऑलम्पिक की 100 मीटर दौड़ में उसने कांस्य पदक जीता। उस वक्त वह 16 साल की थी।

1960 के रोम ऑलम्पिक में उसने तीन दौड़ों में भाग लिया। 100 मीटर में नया विश्व रिकॉर्ड और 200 मीटर में ऑलम्पिक रिकॉर्ड बनाकर विल्मा ने 2 स्वर्ण पदक जीते। 400 मीटर रिले में भी संयुक्त राज्य अमरीका की टीम ने नया विश्व रिकॉर्ड बनाकर स्वर्ण पदक जीता।

दौड़ में तीन स्वर्ण पदक जीतने वाली विल्मा पहली महिला थी। लोग उसको ब्लैक गेज़ेल (काला हिरण) के नाम से पुकारने लगे। वह मशहूर हो गई। 54 साल की उम्र में वह मस्तिष्क कैंसर का शिकार बनी और उससे जूझते हुए 1994 में उसका निधन हो गया।

ऑलम्पिक सिर्फ खेल नहीं...

ऑलम्पिक में खेल ही नहीं और भी बहुत कुछ होता था। युनान में इतने लोग इकट्ठे हों और संगीत, नाटक, पेंटिंग और मूर्तिकला का ज़िक्र न हो...ऐसा कैसे हो सकता है। सोफोक्लीज़ जैसे कलाकार यहाँ अपने दुखान्त नाटक लाए और एरिस्टोफेन्स अपनी कॉमेडी। उस वक्त के जाने-माने कवियों ने यहाँ अपनी कविताएँ पढ़ीं और मूर्तिकार अपनी बेहतरीन कलाकारी के साथ यहाँ पहुँचे। कहते हैं प्लेटो और पाइथागोरस ने भी इसकी प्रतियोगिताओं में भाग लिया था।